

मंत्रालय और समाज कल्याण मंत्रालय में जाकर वे अपनी दस्तक देते हैं, लेकिन उनकी कोई सुनवाई नहीं हो रही है। उनके साथ बड़ा अन्याय होता है। उन्होंने कई बार ज्ञापन दिया है और एक ज्ञापन तो उन्होंने भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री चन्द्रशेखर जी के द्वारा हस्ताक्षरित कराकर भी भेजा है, परन्तु उनकी कोई सुनवाई नहीं हो रही है। यदि आप उनकी तरफ ध्यान देंगे तो वे आपको बड़ी दुआएं देंगे और फिर इससे आपके कर्तव्य का पालन भी हो जाएगा। मैं चाहता हूँ कि उनकी तरफ सरकार का ध्यान जाए।

**उपसभापति:** रक्षा मंत्री जी, इसमें दो चीजें हैं। मैं इस बारे में सरकार का ध्यान खींचना चाहूँगी कि एक तो वे विकलांग हैं जो लड़ाई में, एक्शन में, टेरेरिस्ट्स के साथ एक्शन में विकलांग बन गए हैं, जो जम्मू से विकलांग नहीं थे और कुछ ऐसे विकलांग हैं जो जन्म से विकलांग हैं—सुन नहीं सकते हैं, चल नहीं सकते हैं, स्पेस्टिक चिल्ड्रन हैं, मेंटली, फिज़िकली हैंडीकेप्ड हैं। इस सिलसिले में पार्लियामेंट से हम लोगों ने एक बिल पास किया। सरकार ने उस पर बहुत ध्यान दिया, मंत्री जी बहुत अच्छा बोले, अगर आगे उस पर कुछ हुआ नहीं है। अब यह सब जो हमारे माननीय सदस्य ने उठाया है, भंडारी जी ने, उसमें सबसे बड़ी बात यह है कि जो कमेटी है उसमें सिर्फ विकलांगों के रिप्रेजेंटेटिव्स, जो उनकी कमेटियों में हैं, जो उनके चलाते हैं, वही नहीं बल्कि उनके जो मां-बाप हैं, उनके भी रिप्रेजेंटेटिव्स उसमें लेने चाहिए क्योंकि उनको बड़ी समस्या होती है, उनको बड़ी मुसीबत से गुजरना पड़ता है विकलांग बच्चों को संभालने के लिए और उनके फ्यूचर के लिए। तो ऐसी बहुत सी संस्थाएँ हैं जो उनके मां-बाप से ताल्लुक रखती हैं। जो विकलांगों के मां-बाप हैं, उनके पेरेंट्स हैं, उनकी समस्याओं को भी सरकार को ध्यान में रखना चाहिए। मैं उम्मीद करती हूँ कि यहां जो सरकार के लोग बैठे हुए हैं, पार्लियामेंटरी अफेयर्स मिनिस्टर साहब, आप यह बात सरकार को बतलाएं, रक्षा मंत्री जी अपना देखेंगे और यह सोशियल वेलफेयर मिनिस्ट्री के अंतर्गत आता है। यह बड़ी भारी समस्या है, आज हजारों विकलांग यहां आए हैं। उनकी आवाज़ को अगर हाउस में हम लोग नहीं बोलेंगे, जो फॉरव्युनेट है, जो बोल सकते हैं, चल सकते हैं, तो फिर दूसरा कौन बोलेंगा? वे तो बोल भी नहीं सकते, चल भी नहीं सकते, सुन भी नहीं सकते हैं।

THE MINISTER OF STATE IN THE  
MINISTRY OF PARLIAMENTARY  
AFFAIRS (DR. U. VENKATES-  
WARLU): I will convey, Madam.

THE DEPUTY CHAIRMAN: So, please convey and become the voice, ears and eyes of those who are unfortunate.

DR. U. VENKATESWARLU: I will convey, Madam.

RE. REPORTED STATEMENT BY  
SHRI AJATSHATRU SINGH FOR  
REFERENDUM ON P.O.K.

प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा (दिल्ली): उप-सभापति महोदया, मैं इस सदन का ध्यान जम्मू-कश्मीर सरकार के एक मंत्री, श्री अजातशत्रु सिंह ने पिछले दिनों जो एक वक्तव्य दिया है और जिसमें यह कहा गया है कि जम्मू और कश्मीर में रिफ्रेंडम कराकर जो सीमा-रेखा है, इसको अंतर्राष्ट्रीय सीमा-रेखा बना दिया जाएगा और जो पाकिस्तान आकूपाइड कश्मीर है, उसका भाग पाकिस्तान के पास रह जाए उस वक्तव्य की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। मैं इस गंभीर बात की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि जम्मू और कश्मीर का विलय भारत में इंस्ट्रूमेंट आफ एक्सेशन से हुआ था। इस इंस्ट्रूमेंट आफ एक्सेशन, जिसमें कि महाराजा हरि सिंह ने, उनके दादा ने हस्ताक्षर किए थे, उसमें यह बात साफ तौर पर लिखी हुई है कि:—

“The terms of this my Instrument of Accession shall not be varied by any amendment of the Act or of the Indian Independence Act, 1947.”

Section 3, Part II of the Constitution of Jammu & Kashmir says:

“The State of Jammu & Kashmir is and shall be an integral part of the Union of India.”

Section 4 says:

“The territory of the State shall—  
—the world used here is “shall”  
—“comprise all the territories which, on the 15th day of August, 1947 were under the sovereignty or suzerainty of the Ruler of the State.”

Further, section 147 says:

“No Bill or amendment seeking to make any change in the provisions of section 3 shall be introduced or

moved in either House of the Legislature.”

And the Constitution (Application to Jammu & Kashmir) Order, 1954 says:

“Provided further that no Bill providing for increasing or diminishing the area of the State of Jammu & Kashmir or altering the name or boundary of the State shall be introduced in Parliament without the consent of the Legislature of that State.”

महोदया, किसी व्यक्ति को कोई अधिकार नहीं है कि वह इस तरह की कोई बात करे। न जम्मू-कश्मीर के कॉन्स्टीट्यूशन के मुताबिक, न इंड्रुमेंट आफ ऐक्सीशन के मुताबिक और न हिन्दुस्तान के कॉन्स्टीट्यूशन के मुताबिक इसके किसी भाग को भी किसी के पास छोड़ने की बात की जा सकती है। मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि हमने पाकिस्तान आकूपाइड कश्मीर में जो हिस्सा रह गया है, उसके लिए जम्मू-कश्मीर असेम्बली में सौटें छोड़ रखी हैं और वे सौटें आज भी खाली पड़ी हुई हैं।

हमारा युनैनिमस रेज़ोल्यूशन है दोनों सदनों का जिसमें दोनों सदनों ने, लोक सभा ने और राज्य सभा ने अभी पिछले साल यह रेज़ोल्यूशन पास किया कि अनफिनिशड टास्क इतना बचा है कि पाकिस्तान आकूपाइड कश्मीर का हिस्सा भारत में कैसे लाया जाए, केवल इतनी बात बची हुई है। दोनों सदनों के बीच रेज़ोल्यूशन के बाद और कॉन्स्टीट्यूशनल प्रोविजन के बाद एक व्यक्ति का खड़े होकर रेफरेंडम की बात करना, मैं समझता हूँ कि यह भर्त्सना योग्य है और निन्दनीय है। मैं जानता हूँ कि फारूख अब्दुल्ला जी ने बहुत अच्छा स्टैंड लिया अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में। महाराजा कर्ण सिंह और फारूख अब्दुल्ला, दोनों के बयान यह रहे कि यह भारत का हिस्सा है, भारत का अंग है, इसकी कोई जमीन उनको नहीं दी जा सकती। यह जो रेफरेंडम की बात उठी है, हमें समझना चाहिए कि इसके खतरे क्या हैं। लगातार हिन्दुस्तान रिसिस्ट करता रहा, कश्मीर के लोग रिसिस्ट करते रहे। उधर अमरीका कहता रहा, ब्रिटेन कहता रहा लेकिन हमने कहा कि रेफरेंडम का सवाल पैदा नहीं होता। आप रेफरेंडम की बात मानकर एक ट्रैप में फंस जाएंगे। पाकिस्तान इस बात को कह सकता है कि आज अगर जम्मू-कश्मीर के एक हिस्से के लिए रेफरेंडम हो सकता है तो सारे जम्मू-कश्मीर के लिए क्यों नहीं हो सकता। आज पाकिस्तान को यह खेल खेलने देना या पाकिस्तान के हाथ में यह देना कि कोई रेफरेंडम हो

सकता है, यह ठीक नहीं है। रेफरेंडम होने का कोई सवाल पैदा नहीं होता।

महोदया, कल गुजरल साहब ने कहा कि क्लिनटन साहब के बयान की हम निंदा करते हैं। हमने कहा कि ब्रिटिश एम्पोज़ि जिनहोंने यह रेज़ोल्यूशन रखा, हम उसकी निंदा करते हैं। उसकी निंदा हम क्यों करें, उन्होंने भी तो यही कहा कि डिस्प्यूटेड टैरिटरी है और हम खुद मान रहे हैं कि यह डिस्प्यूटेड टैरिटरी है। महोदया, मुझे आश्चर्य हुआ कि डॉ॰ कर्ण सिंह के ध्यान दिलाने के बाद भी उन्होंने वह विद्वान् नहीं किया। उन्होंने अभी तक माफी नहीं मांगी देश के सामने। पहले प्राईम-मिनिस्टर का यह कहना कि हम थोड़ी-बहुत ऐडजस्टमेंट कर सकते हैं, उसके बाद फारूख अब्दुल्ला का यह कहना कि उसको हम इंटरनेशनल बाउंड्री मान सकते हैं और तीसरा इनका स्टेटमेंट, क्या इसके पीछे कोई डिजाइन है? क्या हिन्दुस्तान का एक हिस्सा पाकिस्तान के हाथ में देने की बात की जा रही है? भारत सरकार को स्पष्ट करना चाहिए कि हिन्दुस्तान की एक इंच जमीन भी उनको नहीं दी जाएगी। बिना किसी शर्त के जोर से इस बात की घोषणा होनी चाहिए।

वह तो कहेंगे कि क्या कोई ऑफर है आपके पाकिस्तान की तरफ से? मैं समझ सकता था कोई ऑफर होती तो। उनसे यहां पर बात की जाती। अब तो “लड़ के लिया आधा कश्मीर, हंसकर लेंगे बाकी कश्मीर” इस बात के वहां पर गुरे लग रहे हैं। उन्होंने लड़कर जो हिस्सा ले लिया, ले लिया। अब हिन्दुस्तान की इस आपसी बातचीत से बाकी कश्मीर के ऊपर अपनी नज़र रखेंगे।

महोदया, कश्मीर भारत का अविभाज्य अंग है, हिन्दुस्तान का अविभाज्य अंग है। इसके बारे में कोई ऐसी बात कहना बहुत निन्दनीय और भर्त्सना योग्य है। यह बात मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ।

**उपसभापति:** सरोज खापर्डे जी, आप बोलिए ... (व्यवधान)

I will call you. Your names are there. I will allow you.

Let these people speak.

**कुमारी सरोज खापर्डे (महाराष्ट्र):** महोदया, प्रोफेसर विजय कुमार मल्होत्रा मेरे बहुत अच्छे मित्र हैं और उनका मैं बहुत आदर करती हूँ। उन्होंने जो अपने विचार इस सदन के सामने रखे हैं, मैं उनसे बिल्कुल सहमत नहीं हूँ। महोदया, मैं यह कहना चाहूंगी कि पाकिस्तान



nation is concerned, I think there is a consensus that Kashmir is an integral part of India and we cannot compromise on that. We cannot secede an inch of our country to anybody.

**SHRI SURINDER KUMAR SINGLA** (Punjab): Madam, I am amazed that Prof. Vijay Kumar Malhotra has to raise this issue to prove his patriotism. It is not really required. The fact of the matter is that even such gimmicks ...*(Interruptions)*

उपसभापति: मुझे सुनने तो देते नहीं, फिर मैं कैसे कमेंट करूँ। ...*(व्यवधान)*

Let me hear him. I have not heard what he said. He said about patriotism. I think nobody should object when he says about patriotism.

**SHRI SURINDER KUMAR SINGLA**: The fact of the matter is that such gimmicks were played on Kashmir, when Dr. Joshi, who was then President of the B.J.P., went to unfurl the flag ...*(Interruptions)*

उपसभापति: अच्छा सुन तो लीजिए क्या कह रहे हैं? फिर बाद में ऐतराज करेंगे कुछ गलत बोलेगे तो। हम तो बैठे हैं बना करने को। अभी तो बोलने दीजिए।

**SHRI SURINDER KUMAR SINGLA**: Madam, they only play to the gallery. In fact, as my senior leader, Shri Pranab Mukherjee has said in this House, as every India including every political party has said again and again the entire Jammu and Kashmir is an integral part of India. Shri Ajatshatru Singh was on record saying that he has been misquoted by the Press. ...*(Interruptions)*. Madam, he has been misquoted by the Press. The Chief Minister of Jammu and Kashmir, Dr. Farooq Abdullah and Dr. Karan Singh who is a Member of this House were on record saying that it is the right and power of the Indian Parliament to discuss about it and nobody else can discuss it. They have already stated about this fact. Why are we discussing about it? It is in the interest of the people of these two countries, India and Pakistan, to discuss about it. The people of these two coun-

tries are looking forward with hope that there would be an amicable settlement which is in the interest of the two countries. I feel that we should not have raised this issue here at all. By raising this issue, Prof. Malhotra has complicated the matters. This kind of complication of the matter is not desirable.

प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा (दिल्ली): मैडम, आपके बोलने के बाद भी ऐसी बात कर रहे हैं? ...*(व्यवधान)*... अगर ये भी उनके साथ सहमत हैं तो बात करें। ...*(व्यवधान)*...

The Chairman has allowed me. you said these things.

**SHRI K.R. MALKANI** (Delhi): Madam, how many members can associate themselves?

श्री विष्णु कान्त शास्त्री (उत्तर प्रदेश): उनकी पार्टी के दो लोग बोल चुके हैं। ...*(व्यवधान)*... उनकी बात का हम अवश्य विरोध करेंगे। ...*(व्यवधान)*...

**THE DEPUTY CHAIRMAN**: Mr. Gurudas Das Gupta, after the declaration by the House that the POK is a part of India, is there anything left out?

**SHRI GURUDAS DAS GUPTA** (West Bengal): Madam, I would just make one point. ...*(Interruptions)*... I am only saying ...*(Interruptions)*... I am only saying ...*(Interruptions)*...

**THE DEPUTY CHAIRMAN**: How can any Member disassociate himself with that? The POK is a part of India. ...*(Interruptions)*...

**SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI** (Uttar Pradesh): From 1951 onwards his party has said a number of times that ...*(Interruptions)*... With an hour's notice, I would go to my house and bring ...*(Interruptions)*... From Mr. Surjit downwards ...*(Interruptions)*... The CPM has also said that same thing. I am amazed at the turn-around in the stand which the party seems to have taken.

**SHRI MD. SALIM** (West Bengal): We have supported it. What are you saying? ...*(Interruptions)*...

**SHRI GURUDAS DAS GUPTA:**  
Madam, I am only saying ...*(Interruptions)*...

**SHTI TRILOKI NATH CHATURVEDI:** He was saying that it was a gimmick. There was no gimmick. आपके जोर से बोलने से मैं दबने वाला नहीं हूँ। सलीम साहब, आप जोर से बोल सकते हैं तो दूसरे भी जोर से बोल सकते हैं। मैं दबने वालों में से नहीं हूँ। अगर दबने वालों में होता तो बहुत पहले ही चला जाता।

**उपसभापति:** बैठिए .... बैठिए ...*(व्यवधान)*...  
बैठ जाइए... Please sit down.

**श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी:** मैडम, मैं आपके कहने पर सब पेपर्स यहाँ रखने के लिए तैयार हूँ। ...*(व्यवधान)*...

**THE DEPUTY CHAIRMAN:** Please sit down. What do I mean by 'sit down'? 'Sit down' also means that you should not speak. 'Sit down' also means that you should not speak while I am standing to speak. There are no two opinions and there can never be two opinions, either in this House or outside this House, in the country, that POK is an integral part of India. So, whatever argument is going on in this respect is beyond my understanding. It is going beyond my head. I do not know what the *Vivad* is. I don't understand as to what the difference of opinion is. *(Interruptions)* I request you to please keep quiet. It is a very serious matter. It is a matter relating to our country's image. This reflects the seriousness of the Members of Parliament about an area which is being occupied illegally by another country. If they are going to sort out the matter by way of a talk, let the Government have a talk to settle the problem. All of us want to settle the problem without giving even a centimetre or a millimetre of our land. That is the question here. We had passed a resolution on the floor of this House to this effect. How can anybody go beyond that? So, there cannot be any discussion on that matter. *(Interruptions)*

**SHRI GURUDAS DAS GUPTA:**  
Madam, you called my name but I was

obstructed. I was not allowed to speak. I must be allowed to make my submission. My point is very clear. The point is, Kashmir is an integral part of India, and this point is not a debatable point. No party in this country stands for a solution of Kashmir by surrendering Kashmir to Pakistan. That is not the issue. *(Interruptions)*

**THE DEPUTY CHAIRMAN:** What is the issue? Let me hear. I do not know.

**SHRI GURUDAS DAS GUPTA:** We are dictated by our conscience, understanding and reasons. We are not dictated by anybody else. *(Interruptions)* There is another issue. The issue is, Kashmir is well-known to us. At the same time, the issue is, in this sub-continent, there has to be ...*(Interruptions)*

**SHRI K.R. MALKANI:** What is this? Why is he referring to the sub-continent? *(Interruptions)*

**SHRI GURUDAS DAS GUPTA:**  
What is the problem?

**THE DEPUTY CHAIRMAN:** Malkani Ji, what is the problem?

**श्री विष्णुकान्त शास्त्री:** सब-कॉन्टिनेंट नहीं है। उपमहाद्वीप नहीं है। ...*(व्यवधान)*...

**SHRI MD. SALIM:** If he wants to do this drama, he should do it outside the House. *(Interruptions)*

**SHRI GURUDAS DAS GUPTA:** I must complete what I am saying, Madam.

**THE DEPUTY CHAIRMAN:** Mr. Malkani, please sit down. Mr. Malkani, continent or sub-continent is a geographical word. Why should anybody get agitated over it? गुरुदास जी बोलिए, अब आप अपनी बात को खत्म कीजिए।

**SHRI GURUDAS DAS GUPTA:**  
Madam, I must finish. This cannot be allowed. *(Interruptions)* I request you to kindly allow me to complete. I am not to be browbeaten by anybody in this House. Let it be known to everybody. This is a House where every Member has an equal

right. You cannot stop me from speaking.  
(Interruptions)

SHRI K.R. MALKANI: You cannot speak like this. (Interruptions)

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: She will decide. ... (Interruptions)... She will decide. ... (Interruptions)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: What is it? ... (Interruptions)... I didn't hear. ... (Interruptions)...

DR. BIPLAB DASGUPTA (West Bengal): Madam, what is this? ... (Interruptions)...

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Madam, I must complete my submission. ... (Interruptions)... I will complete my submission in two minutes. ... (Interruptions)...

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI: You never want to complete anything. ... (Interruptions)...

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Do you allow me, Madam? ... (Interruptions)...

SHRI S.S. AHLUWALIA (Bihar): Madam, I am on a point of order. ... (Interruptions)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Just one minute. ... (Interruptions)...

SHRI S.S. AHLUWALIA: Madam, my point of order is this. I have seen the convention of this House. Whenever a Member raises a point during the Zero Hour or during Special Mentions, Members associate themselves with it. But we have started a new convention of dissociating and this is gone too far and we are unnecessarily dragging it and things have gone out of control. ... (Interruptions)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Right. ... (Interruptions)...

SHRI S.S. AHLUWALIA: Madam, the point is that you must give your ruling on this. ... (Interruptions)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Gurudas Das Gupta, aap baithiye. I will call you again.

SHRI S.S. AHLUWALIA: Madam, you must give your ruling. When a Member is raising a point of information or sharing a point of information with the Government, through you, if anybody is interested in associating himself with it, he should be allowed to associate. It depends on you. But dissociation should not be allowed. ... (Interruptions)...

DR. BIPLAB DASGUPTA: No, no. ... (Interruptions)...

AN HON. MEMBER: The House cannot be run like this. ... (Interruptions)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: He has asked me. ... (Interruptions)...

SHRI S.S. AHLUWALIA: Different points of view can be discussed only during debates, not during Zero Hour mentions. It is the right of the Chairman to give permission. At the time of permission you should consider whether it will attract a debate or not. If it is likely to attract a debate, you should give adequate time. ... (Interruptions)...

SHRI SATISH AGARWAL (Rajasthan): Zero Hour mentions do not lead to a debate. ... (Interruptions)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I agree. ... (Interruptions)...

SHRI SATISH AGARWAL: Zero Hour mentions do not lead to a debate. Zero Hour mentions are not meant for a debate. Dissociation will lead to a debate. This is not permissible. Dissociation means that the Chairman has committed a mistake in allowing a particular Member to make a Zero Hour submission. Dissociation means that. ... (Interruptions)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I am sorry to comment over here. When it hurts a Member he says that there should be no dissociation. When it hurts another Member he wants dissociation. Fortunately or unfortunately, each

Member—I can say from my memory and from the record—has violated the rule of association and dissociation in this House. Nobody is above that. No one in this House can get up and say that he has not associated or dissociated himself with some points. This point cannot be decided by the Chair alone. In my opinion, a matter which is raised in the Zero Hour or a Special Mention is not always such a simple matter that there would be no dissociation. Sometimes, when matters, which may hurt or attack some other political party or their views or their opinions are raised, there has always been dissociation. I have seen it from my experience. Mr. Ahluwalia should have also experienced it. I would be very happy if the House itself decides a rule that there is only association. If anybody wants another Special Mention, he can have it. At this moment today, in this case or in any other case I cannot arbitrarily give my ruling to that effect. ...*(Interruptions)*... Now the House is going to be adjourned.

SHRI V. KISHORE CHANDRA S. DEO (Andhra Pradesh): Madam Deputy Chairperson, this is a convention of the House. ...*(Interruptions)*...

श्री सिकन्दर बख्त: सदर साहिबा, मैं...

उपसभापति: पहले वे कुछ कह रहे हैं, उनकी बात सुन लें और फिर आपकी बात सुनूंगी।

SHRI V. KISHORE CHANDRA S. DEO: Madam Deputy Chairperson, this is a convention of the House. ...*(Interruptions)*...

DR. BIPLAB DASGUPTA: Madam, you close the matter:

SHRI V. KISHORE CHANDRA S. DEO: No, Madam. I have to make a submission on this. This House has a 1.00 P.M.

convention regarding certain issues to which hon. Members have been associating themselves. Madam, to associate yourself with an issue does not

necessarily mean to agree or disagree with the issue. When you associate yourself with an issue, that means you want to express your opinion on that particular issue. Let us not distort this convention and the procedure of the House by saying that association means you cannot say anything against that particular issue. It can be for or it can be against. When you associate yourself with an issue, you just want to participate in the discussion. ...*(Interruptions)*...

श्री सिकन्दर बख्त: सदर साहिबा, मुझे सिर्फ यह अर्ज करना है कि वज्राहिर तो यह लगता है कि पूरा हाउस जो बात आपने कही है उससे मुतफिक है। लेकिन कुछ बातों को स्ट्रेच किया जा रहा है। मामला सीधा सीधा यह था कि जम्मू और कश्मीर के एक मिनिस्टर साहब ने एक बयान दिया है जो हमारे मुल्क के इंटेरेस्ट में नहीं जाता है। मामला सिर्फ इतना था। अब सरोज साहिबा ने कहा, उनकी बात समझ में आ गई। उन्होंने कहा कि वह बेसिक इश्यू से इतफाक करती है। उसके बाद एक और आनोबल मेंबर ने खड़े होकर बात की और उन्होंने उसको हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के रिलेशनशिप से जोड़ दिया। बात बिल्कुल मेहदूद है, सीमित है। इस किसम का कोई बयान जो कश्मीर के सिलसिले में हिन्दुस्तान के इंटेरेस्ट के खिलाफ जाता हो, वह नहीं आना चाहिए। इसके ऊपर बात और नहीं है। वह डिस-एसोसिएशन हो या एसोसिएशन हो, कुछ भी हो लेकिन इस बेसिक चीज से ऊपर जाने का हक एक हिन्दुस्तानी होने के नाते किसी को हो नहीं सकता है। मुझे सिर्फ इतना ही कहना है।

ایشری سیکندر بخت: صدر صاحبہ - مجھے صرف یہ عرض کرنا ہے کہ بنظاہر تو یہ لگتا ہے کہ پورا ہاؤس میں جو بات آپ نے کہی ہے اس سے متفق ہے۔ لیکن کچھ باتوں کو اسٹریچ لیا جا رہا ہے۔ معاملہ سیدھا سیدھا ہے۔ تھا کہ جموں اور کشمیر کے ایک منسٹر صاحب نے ایک بیان دیا ہے جو ہمارے ملک کے

انٹرنیشنل میں نہیں جاتا ہے۔ معاملہ صرف  
 اتفاقاً اب شروع صاحب نے کیا۔ ان کی  
 بات سمجھ میں آئی گی۔ انھوں نے کہا کہ وہ  
 بیسک ایئرشپ سے اتفاق کرتی ہیں اسکے بعد  
 ایک اور انٹرنیشنل ممبر نے ٹھکر سے ہو کر بات  
 کی اور انھوں نے اسکو صفحہ و ستان اور پاکستان  
 کے ریلیشن شپ سے جوڑ دیا۔ بات بالکل  
 محدود ہے۔ سیدھی ہے۔ اس قسم کا کوئی  
 بیان جو ٹھکر کے سلسلے میں صفحہ و ستان  
 کے انٹرنیشنل کے خلاف جاتا ہو۔ وہ نہیں  
 آتا چاہیے۔ اس کے اوپر بات اور نہیں ہے۔  
 وہ ڈس ایسی ایشن ہو یا ایسوسی ایشن ہو۔  
 کچھ بھی لیکن اس بیسک چیز سے اوپر جانے  
 کا حق ایک صفحہ و ستانی ہونے کے نامے  
 کسی کو ہو نہیں سکتا۔ مجھے صرف اتنا ہی کہنا  
 ہے۔

THE DEPUTY CHAIRMAN: Don't you agree with what he said? That matter is closed. Because you also agree that Kashmir is an integral part of India.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY (Andhra Pradesh): Yes.

THE DEPUTY CHAIRMAN: No, I am asking Mr. Gurudas Das Gupta.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: It is not. ...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Raksha Mantriji, do you want to say something?

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: I am not speaking. You have upheld my right. I am not speaking.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Raksha Mantriji, with your comment I will adjourn the House.

रक्षा मंत्री (श्री मुलायम सिंह यादव): आपने इतना अच्छा बोल दिया है, जो हम बोलना चाहते थे आपने उससे और आगे, और बढ़कर बोल दिया है। इसलिए मुझे बोलने की आवश्यकता नहीं है। मैं इस सदन को आश्चस्त करना चाहता हूँ कि जो पहले सरकार की नीति थी कि कश्मीर पर अनधिकृत कब्जा जो पाकिस्तान का है वह हिन्दुस्तान का अभिन्न अंग है, यह पहले भी था और आज भी है और किसी भी कीमत पर कश्मीर हिन्दुस्तान का अभिन्न अंग रहेगा। इसके लिए कितनी भी बड़ी कुर्बानी करनी पड़े सभी कुर्बानी करेंगे।

THE DEPUTY CHAIRMAN: The House is adjourned for lunch for one hour.

The House then adjourned for lunch at three minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at nine minutes past two of the clock, The Vice-Chairman (Shri Sanatan Bisi) in the Chair.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANATAN BISI): Statement by Shri T.G. Venkatraman.

#### STATEMENT REGARDING ORDINANCE

National Highways Laws (Amendment)  
Ordinance, 1997

THE MINISTER OF SURFACE TRANSPORT (SHRI T.G. VENKATRAMAN): Sir, I beg to lay on the Table, a Statement (in English and Hindi) explaining the circumstances which had necessitated immediate legislation by National Highways Laws (Amendment) Ordinance, 1997.

(Placed in Library. See No. LT-1473/97)

THE NATIONAL HIGHWAYS LAWS  
(AMENDMENT) BILL, 1997

THE MINISTER OF SURFACE TRANSPORT (SHRI T.G.